• श्राद्ध...

पिंडदान

हिंदू धर्म में सोमवती अमावस्या एक विशेष दिन माना जाता है। इस दिन पितरों का श्राद्ध करने और पिंडदान देने का विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन किए गए पिंडदान से पितरों को मुक्ति मिलती है और उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। सोमवती अमावस्या के दिन पिंडदान करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और लोगों को पितृ दोष से मुक्ति मिलती है। साथ ही पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है जिससे जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इसके अलावा जीवन में आने वाली परेशानियों से छुटकारा मिलता है।

▶ पंचांग के अनुसार सोमवती अमावस्या 2 सितंबर दिन सोमवार को मनाई जाएगी। यह भाद्रपद माह की पहली अमावस्या होगी। इस तिथि पर पितरों का श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान करने से जीवन के सभी दुख और कष्ट दूर हो जाते हैं।

▶ सूर्योदय के समय पिंडदान करना

शुभ माना जाता है। इसलिए सूर्य निकलने के बाद ही पिंडदान करें।

▶ फिर एक साफ स्थान पर पितरों की तस्वीर या प्रतिमा स्थापित करें और पितरों को जल अर्पित करें।

▶ गाय के गोबर से पिंड बनाकर पितरों के नाम का श्राद्ध कर नदी के बहते जल में प्रभाहित करें।

▶ सोमवती अमावस्या के दिन पितरों की शांति के लिए ब्राह्मणों को दान देना बहुत ही शुभ माना जाता है।

▶ दान में तिल, काले तिल, जल, दही, शहद, गाय का दूध, गंगाजल, वस्त्र, अन्न, आदि शामिल करें।

▶ पितृदोष निवारण के लिए पिंडदान करते समय मंत्रों का जाप करें और धार्मिक ग्रंथों का पाठ करें।

▶ इन बातों का रखें खास ध्यान- अगर किसी के परिवार में कोई पुरुष सदस्य नहीं है तो उनके रिश्तेदार भी पिंडदान कर सकते हैं। नदी के किनारे, धार्मिक स्थल पर जाकर पिंडदान किया जा सकता है। अगर पितृ दोष बहुत अधिक हो तो ज्योतिषी की सलाह से एक से अधिक बार भी पिंडदान किया जा सकता है। पिंडदान करते समय शुद्ध मन से पितरों को याद करें। पिंडदान के बाद ब्राह्मणों को भोजन करवाएं और पिंडदान के बाद दान जरूर करें।

▶ पिंडदान करने से पहले किसी पंडित से सलाह लेना उचित होता है। पिंडदान के दौरान सभी नियमों का पालन करना जरूरी है, क्योंकि पितरों को मुक्ति दिलाने के लिए पिंडदान एक पवित्र कर्म है। इस दिन पितरों को याद करके और उन्हें श्रद्धांजलि देकर हम उनके आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं और साथ ही पितृ दोष से मुक्ति भी पा सकते हैं।

• पूजा-पाठ...

प्रदोष व्रत

हिंदू धर्म में भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित प्रदोष व्रत का बहुत अधिक महत्व होता है। इस दिन विवाहित महिलाएं सुखी जीवन और कुंवारी लड़कियां मनचाहा वर पाने के लिए व्रत रखती हैं और भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष पूजा करती हैं। ऐसी

मान्यता है कि प्रदोष व्रत के दिन उपवास और पूजा करने से लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं और विशेष रूप से विवाह योग्य कन्याओं को मनचाहा वर प्राप्त होता है।

▶▶ पंचांग के अनुसार, भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की त्रियोदशी तिथि 31 अगस्त दिन शनिवार को सुबह 2 बजकर 26 मिनट पर शुरू होगी और 1 सितंबर दिन रविवार को सुबह 3 बजकर 41 मिनट तक त्रयोदशी तिथि रहेगी। उदयातिथि के अनुसार, भाद्रपद माह का पहला शनि प्रदोष व्रत 31 अगस्त दिन शनिवार को ही रखा जाएगा।

▶▶ शनिवार के दिन पड़ने के कारण इसे शनि प्रदोष व्रत कहा जा रहा है। शनि प्रदोष व्रत के दिन शाम में 5 बजकर 44 मिनट से 7 बजकर 44 मिनट तक पूजा के लिए सबसे अच्छा मुहूर्त है। इस दौरान प्रदोष व्रत की पूजा करना सबसे अधिक फलदायी होगा।

▶▶ **पूजा सामग्री**-भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा में शिवलिंग और शिव-पार्वती की मूर्ति, बेलपत्र, धतूरा, भांग, चंदन, फूल, दीपक, धूप, नैवेद्य, गंगाजल, शुद्ध कपड़े, चौकी आदि मुख्य रूप से अवश्य शामिल करें। इस चीजों के बिना प्रदोष व्रत की पूजा अधूरी मानी जाती है।

▶▶ **प्रदोष व्रत पूजा विधि**

▶▶ प्रदोष व्रत के दिन सबसे पहले स्नान करके साफ कपड़े धारण करें और पूजा स्थल को साफ कर लें।

▶▶ शिवलिंग और माता पार्वती की प्रतिमा को एक चौकी पर स्थापित करें और उस पर गंगाजल छिड़कें।

शिवलिंग पर गंगाजल, दूध, दही, शहद, घी और बेलपत्र से अभिषेक करें।

▶▶ शिवलिंग और माता पार्वती की प्रतिमा को चंदन, रोली और फूलों से सजाएं।

▶▶ फिर दीपक जलाएं और धूप जलाकर आरती करें और कथा का पाठ करें।

▶▶ अंत में शिव-पार्वती को भोग लगाएं और उसी भोग को लोगों को प्रसाद के रूप में बांटे।

▶▶ भगवान शिव और माता पार्वती से मनचाहा वर प्राप्त करने की प्रार्थना करें।

▶▶ यह पूजा प्रदोष काल में करनी चाहिए. प्रदोष काल सूर्यास्त के समय शुरू होता है।

▶▶ **इन बातों का रखें ध्यान**-विवाह योग्य कन्याओं को इस व्रत को विशेष रूप से करना चाहिए। व्रत के दौरान शारीरिक और मानसिक रूप से शुद्ध रहें। प्रदोष व्रत के दिन माता पार्वती की पूजा विशेष रूप से करें। माता पार्वती को सिंदूर, बिंदी और मेहंदी लगाएं। माता पार्वती को लाल रंग के फूल अर्पित करें। माता पार्वती से मनचाहा वर पाने की प्रार्थना करें।

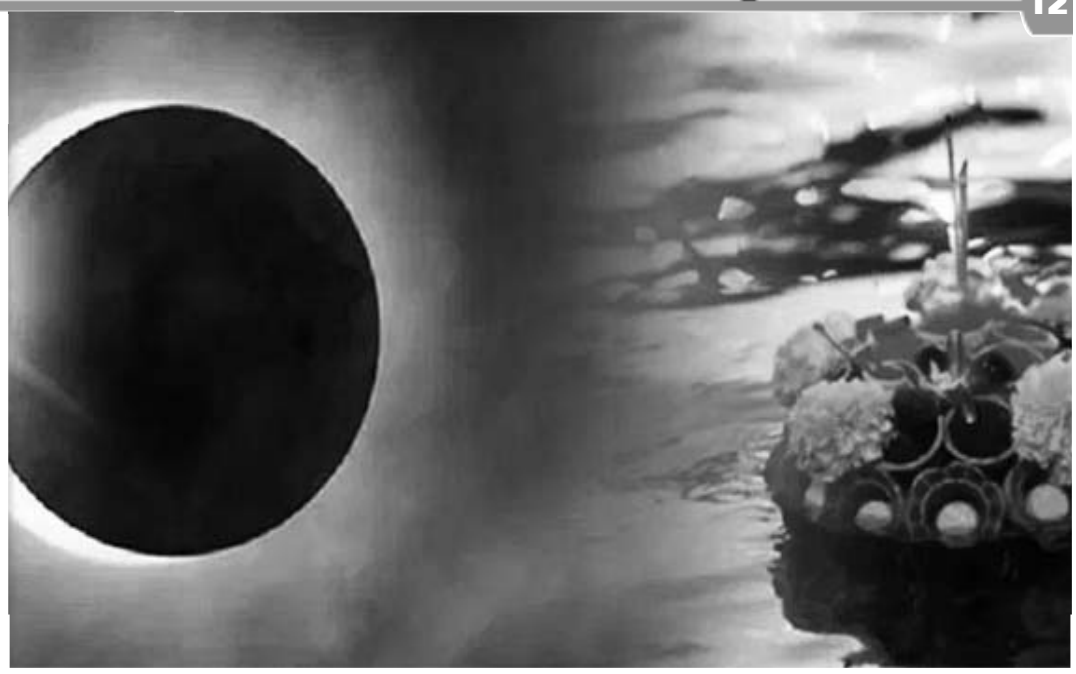

सोमवती अमावस्या

पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह की अमावस्या का आरंभ 2 सितंबर, दिन सोमवार को सुबह 5 बजकर 21 मिनट पर होगा और इसका समापन अगले दिन 3 सितंबर को सुबह 7 बजकर 24 मिनट पर होगा।

भाद्रपद माह की अमावस्या 2 सितंबर 2024, दिन सोमवार को मनाई जाएगी। सोमवती अमावस्या के दिन ब्रह्म मुहूर्त का समय सुबह 4 बजकर 38 मिनट से लेकर सुबह के 5 बजकर 24 मिनट तक रहेगा

सोमवती अमावस्या का दिन हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखता है। इस दिन दिन मां तुलसी की परिक्रमा का विधान है। जीवन में सुख-समृद्धि कायम बनी रहने के लिए महिलाएं सोमवती अमावस्या के दिन व्रत रखती हैं और सभी दुखों के निवारण के लिए मां तुलसी की परिक्रमा करती हैं। इस दिन मां तुलसी की पूजा करने और उनकी परिक्रमा करने से महिलाओं के कई तरह के लाभ प्राप्त होते हैं। मान्यता है कि इस दिन की गई तुलसी की परिक्रमा से लोगों के सभी दुख दूर होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

● पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह की अमावस्या का आरंभ 2 सितंबर, दिन सोमवार को सुबह 5 बजकर 21 मिनट पर होगा और इसका समापन अगले दिन 3 सितंबर को सुबह 7 बजकर 24 मिनट पर होगा। भाद्रपद माह की अमावस्या 2 सितंबर 2024, दिन सोमवार को मनाई जाएगी। सोमवती अमावस्या के दिन ब्रह्म मुहूर्त का समय सुबह 4 बजकर 38 मिनट से लेकर सुबह के 5 बजकर 24 मिनट तक रहेगा। इस दिन पूजा का शुभ मुहूर्त सुबह 6 बजकर 9 मिनट से लेकर सुबह के 7 बजकर 44 मिनट तक रहेगा।

● **तुलसी की परिक्रमा करने की विधि**

सोमवती अमावस्या के दिन सबसे पहले स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

● तुलसी के पौधे को गंगाजल से धोकर साफ करें और उनका श्रृंगार करें।

तुलसी के पौधे के सामने घी का दीपक जलाएं और धूप दें।

● तुलसी के पौधे को फूल, चंदन आदि से सजाएं।

● तुलसी के पौधे की दक्षिणावर्त दिशा में 108 बार परिक्रमा करें।

परिक्रमा करते समय 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' या 'ऊँ तुलसी माता नमः' मंत्र का जाप करें।

● मां तुलसी से अपनी मनोकामनाएं मांगे।

● **इन बातों का रखें खास ध्यान**

सोमवती अमावस्या के दिन व्रत का पालन कर तुलसी की परिक्रमा करने से सभी प्रकार के दुख दूर होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इसके अलावा मोक्ष की प्राप्ति होती है और मन शांत और स्थिर रहता है। सोमवती अमावस्या पर तुलसी की परिक्रमा करते समय मन में किसी भी प्रकार का नकारात्मक विचार नहीं लाना चाहिए और तुलसी के पौधे को हमेशा साफ-सुथरा रखना चाहिए। तुलसी के पौधे को कभी भी तोड़ना नहीं चाहिए।

● ऐसी मान्यता है कि तुलसी को सभी देवी-देवताओं का प्रिय माना जाता है। तुलसी का पौधा घर में लगाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। तुलसी के पत्ते को भगवान विष्णु को चढ़ाना बहुत शुभ माना जाता है। तुलसी के पौधे को घर के आंगन में या घर के पूर्व या उत्तर दिशा में लगाना शुभ माना जाता है। सोमवती अमावस्या पर तुलसी की परिक्रमा करने से आप सभी प्रकार के दुखों से मुक्त हो सकते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

● **सोमवती अमावस्या के दिन दान का महत्व**

सोमवती अमावस्या के दिन स्नान दान का भी विशेष महत्व माना जाता है। मान्यता है कि सोमवती अमावस्या के दिन दान करने से पितृ दोष दूर होता है और पितरों को तृप्ति मिलती है। इस दिन दान करने से घर में सुख-समृद्धि आती है और पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन दान करने से देवता प्रसन्न होते हैं और जातक को आशीर्वाद देते हैं, साथ ही इस दिन दान करने से मनोकामनाएं भी पूरी होती है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• घर में...

वास्तु दोष

जिन पति-पत्नी के बीच अक्सर छोटी-छोटी बातों को लेकर अनबन होती हो, उन्हें वास्तु दोष का खास ख्याल रखना चाहिए। बात करें, वास्तु शास्त्र के अनुसार सोने की दिशा की, तो सोते समय पति-पत्नी का सिर दक्षिण दिशा में और पैर उत्तर दिशा की तरफ होने चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार पति-पत्नी को पूर्व दिशा की तरफ भी पैर करके नहीं सोना चाहिए। इससे गृहक्लेश के साथ ही पति-पत्नी को सेहत से जुड़ीं परेशानियां भी होने लग जाती हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा का धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। सूर्य पूर्व से उदय होता है, इसलिए पूजा-पाठ, हवन और भोजन पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके ही किया जाता है। इस दिशा में कभी भी पैर करके नहीं सोना चाहिए। वास्तु शास्त्र के अनुसार पति-पत्नी को अपना बिस्तर या बेड दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगानी चाहिए। इससे पति-पत्नी के बीच प्यार बना रहता है और वैवाहिक जीवन खुशहाल बना रहता है।

• पितृदोष...

पितृगणों की स्मृति में प्याउ लगवाना चाहिए तथा भूखे गरीबों को भोजन की व्यवस्था पितृपक्ष में अवश्य करनी चाहिए। पितृ पक्ष की अमावस्या को तर्पण एवं ब्राह्मणभोज करने से पितृदोष का निवारण होता है। गायों की पूजा करने से पितृ ऋण उतर जाता है, और सभी देवताओं की पूजा हो जाती है। जो व्यक्ति भोजन के प्रथम भाग को नित्य गाय को देता है वो सभी प्रकार के सुख-समृद्धि को प्राप्त कर लेता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित